

**International Journal of Innovative Research in Science,
Engineering and Technology**

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

जे. कृष्णमूर्ति: शिक्षा का वास्तविक स्वरूप

Dr. Zarfishan Zaidi

Assistant Professor, SPC Government College, Ajmer, India

सार

जिदू कृष्णमूर्ति 1895 से 1986 तक जीवित रहे, और उन्हें बीसवीं शताब्दी के सबसे महान दार्शनिक और आध्यात्मिक आंकड़ों में से एक माना जाता है। कृष्णमूर्ति ने किसी भी जाति, राष्ट्रीयता या धर्म के प्रति निष्ठा का दावा नहीं किया और किसी भी परंपरा से बंधे नहीं थे। उनका उद्देश्य मानव जाति को बद्ध मन की विनाशकारी सीमाओं से बिना शर्त मुक्त करना था। लगभग साठ वर्षों तक उन्होंने दुनिया की यात्रा की और 1986 में नब्बे वर्ष की आयु में अपने जीवन के अंत तक बड़े दर्शकों से सहज रूप से बात की। उनके पास कोई स्थायी घर नहीं था, लेकिन जब वे यात्रा नहीं करते थे, तो वे अक्सर ओजई, कैलिफ़ोर्निया, ब्रॉकवुड पार्क, इंग्लैंड और चेन्नई, भारत में रहते थे। अपने भाषणों में, उन्होंने लोगों को दैनिक जीवन में अपने विचारों और भावनाओं की सूक्ष्मताओं से अवगत होकर, आत्म-ज्ञान के माध्यम से खुद को बदलने की आवश्यकता की ओर इशारा किया। जिदू कृष्णमूर्ति का जन्म 11 मई 1895 को दक्षिण भारत के एक छोटे से शहर मदनपल्ले में हुआ था। उन्हें और उनके भाई को थियोसोफिकल सोसाइटी के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ एनी बेसेंट ने अपनी युवावस्था में गोद लिया था। डॉ बेसेंट और अन्य ने घोषणा की कि कृष्णमूर्ति को एक विश्व शिक्षक बनना था, जिसके आने की भविष्यवाणी थियोसोफिस्टों ने की थी। इस आगमन के लिए दुनिया को तैयार करने के लिए, ऑर्डर ऑफ द स्टार इन द ईस्ट नामक एक विश्वव्यापी संगठन का गठन किया गया और युवा कृष्णमूर्ति को इसका प्रमुख बनाया गया।

हालांकि, 1929 में, कृष्णमूर्ति ने उस भूमिका को त्याग दिया जिसकी उनसे अपेक्षा की गई थी, इस आदेश को इसके विशाल अनुयायियों के साथ भंग कर दिया, और इस काम के लिए दान किए गए सभी धन और संपत्ति को वापस कर दिया। उन्होंने थियोसोफिस्टों के प्रमुख के रूप में इस्तीफा दे दिया, और एक धार्मिक या आध्यात्मिक संगठन की किसी भी धारणा के लिए सभी संबंधों को काट दिया। इसके तुरंत बाद एक "मूल" कथन आया, जिसे संक्षेप में "सत्य एक पथहीन भूमि है: मनुष्य किसी भी संगठन के माध्यम से, किसी भी पंथ के माध्यम से, किसी भी हठधर्मिता, पुजारी या अनुष्ठान के माध्यम से, किसी दार्शनिक ज्ञान या मनोवैज्ञानिक तकनीक के माध्यम से नहीं आ सकता है। उसे इसे संबंधों के दर्पण के माध्यम से, अपने मन की सामग्री की समझ के माध्यम से, अवलोकन के माध्यम से खोजना होगा, न कि बौद्धिक विश्लेषण या आत्मनिरीक्षण विच्छेदन के माध्यम से।"

अपने शेष लंबे जीवन के लिए, उन्होंने एक अधिकार के रूप में नहीं बल्कि एक अन्वेषक के रूप में सभी मान्यताओं पर सवाल उठाकर जीवन के मूलभूत मुद्दों को देखने और अपने श्रोताओं को ऐसा करने के लिए चुनौती देने की शिक्षा दी।

कृष्णमूर्ति के काम का शरीर विशाल है, कुछ का अनुमान 100 मिलियन से अधिक शब्दों में है; दुनिया भर में 60 साल से अधिक या कम निर्बाध उपस्थिति। 1986 में उनकी मृत्यु के समय फाउंडेशन के लिए उनका आरोप दुनिया भर में उनके गैर-व्याख्या किए गए, प्रामाणिक कार्य का प्रसार करना था। उनकी वार्ताओं और संवादों को साठ से अधिक पुस्तकों में संकलित और प्रकाशित किया गया है और कई अलग-अलग भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनकी पुस्तकों में द एंडिंग ऑफ टाइम , फ्रीडम फ्रॉम द नोन , कमेंट्री ऑन लिविंग , एजुकेशन एंड द सिग्निफिकेशन ऑफ लाइफ , द अवेकनिंग ऑफ इंटेलेजेंस और द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम शामिल हैं।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

परिचय

जे. कृष्णमूर्ति (पूरा नाम: 'जिदू कृष्णमूर्ति', अंग्रेज़ी: Jiddu Krishnamurti, जन्म: 12 मई, 1895 - मृत्यु: 17 फ़रवरी, 1986) एक विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विषयों के बड़े ही कुशल एवं परिपक्व लेखक थे। इन्हें प्रवचनकर्ता के रूप में भी ख्याति प्राप्त थी। जे. कृष्णमूर्ति मानसिक क्रान्ति, बुद्धि की प्रकृति, ध्यान और समाज में सकारात्मक परिवर्तन किस प्रकार लाया जा सकता है, इन विषयों आदि के बहुत ही गहरे विशेषज्ञ थे। अपनी मसीहाई छवि को दृढ़तापूर्वक अस्वीकृत करते हुए कृष्णमूर्ति ने एक बड़े और समृद्ध संगठन को भंग कर दिया, जो उन्हीं को केंद्र में रखकर निर्मित किया गया था; उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सत्य एक 'मार्गरहित भूमि' है और उस तक किसी भी औपचारिक धर्म, दर्शन अथवा संप्रदाय के माध्यम से नहीं पहुंचा जा सकता। जे. कृष्णमूर्ति का जन्म तमिलनाडु के एक छोटे-से नगर में निर्धन ब्राह्मण परिवार में 12 मई, 1895 को हुआ था।^[1,2] अपने माता-पिता की आठवीं संतान के रूप में उनका जन्म हुआ था इसीलिए उनका नाम कृष्णमूर्ति रखा गया। कृष्ण भी वासुदेव की आठवीं संतान थे। इनके पिता 'जिदू नारायनिया' ब्रिटिश प्रशासन में सरकारी कर्मचारी थे। जब कृष्णमूर्ति केवल दस साल के ही थे, तभी इनकी माता 'संजीवामा' का निधन हो गया। बचपन से ही इनमें कुछ असाधारणता थी। थियोसोफ़िकल सोसाइटी के सदस्य पहले ही किसी विश्वगुरु के आगमन की भविष्यवाणी कर चुके थे। श्रीमती एनी बेसेंट और थियोसोफ़िकल सोसाइटी के प्रमुखों को जे. कृष्णमूर्ति में वह विशिष्ट लक्षण दिखाई दिये, जो कि एक विश्वगुरु में होते हैं। एनी बेसेंट ने जे. कृष्णमूर्ति की किशोरावस्था में ही उन्हें गोद ले लिया और उनकी परवरिश पूर्णतया धर्म और आध्यात्म से ओत-प्रोत वातावरण में हुई।^[3,4]

थियोसोफ़िकल सोसाइटी के प्रमुख को लगा कि जे. कृष्णमूर्ति जैसे व्यक्तित्व का धनी ही विश्व का शिक्षक बन सकता है। एनी बेसेंट ने भी इस विचार का समर्थन किया और जिदू कृष्णमूर्ति को वे अपने छोटे भाई की तरह मानने लगीं। 1912 में उन्हें शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजा गया और 1921 तक वे वहाँ रहे। इसके बाद विभिन्न देशों में थियोसोफ़िकल पर भाषण देने का क्रम चलता रहा। जे. कृष्णमूर्ति ने सदैव ही इस बात पर बल दिया था कि प्रत्येक मनुष्य को मानसिक क्रान्ति की आवश्यकता है और उनका यह भी मत था कि इस तरह की क्रान्ति किन्हीं बाह्य कारक से सम्भव नहीं है। चाहे वह धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक किसी भी प्रकार की हो।^[5,6]

कृष्णमूर्ति के विचारों के जन्म को उसी तरह माना जाता है जिस तरह की एटम बम का अविष्कार के होने को। कृष्णमूर्ति अनेकों बुद्धिजीवियों के लिए रहस्यमय व्यक्ति तो थे ही साथ ही उनके कारण विश्व में जो बौद्धिक विस्फोट हुआ है उसने अनेकों विचारकों, साहित्यकारों और राजनीतिज्ञों को अपनी जड़ में ले लिया। उनके बाद विचारों का अंत होता है। उनके बाद सिर्फ विस्तार की ही बातें हैं।^[1] 1927 में एनी बेसेंट ने उन्हें 'विश्व गुरु' घोषित किया। किन्तु दो वर्ष बाद ही कृष्णमूर्ति ने थियोसोफ़िकल विचारधारा से नाता तोड़कर अपने नये दृष्टिकोण का प्रतिपादन आरम्भ कर दिया। अब उन्होंने अपने स्वतंत्र विचार देने शुरू कर दिये। उनका कहना था कि व्यक्तित्व के पूर्ण रूपान्तरण से ही विश्व से संघर्ष और पीड़ा को मिटाया जा सकता है। हम अन्दर से अतीत का बोझ और भविष्य का भय हटा दें और अपने मस्तिष्क को मुक्त रखें। उन्होंने 'आर्डर ऑफ़ द स्टार' को भंग करते हुए कहा कि 'अब से कृपा करके याद रखें कि मेरा कोई शिष्य नहीं है, क्योंकि गुरु तो सच को दबाते हैं। सच तो स्वयं तुम्हारे भीतर है।...सच को ढूँढने के लिए मनुष्य को सभी बंधनों से स्वतंत्र होना आवश्यक है।' [7,8] कृष्णमूर्ति ने बड़ी ही फुर्ती और जीवटता से लगातार दुनिया के अनेकों भागों में भ्रमण किया और लोगों को शिक्षा दी और लोगों से शिक्षा ली। उन्होंने पूरा जीवन एक शिक्षक और छात्र की तरह बिताया। मनुष्य के सर्वप्रथम मनुष्य होने से ही मुक्ति की शुरुआत होती है, किंतु आज का मानव हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम, अमेरिकी या अरबी है। उन्होंने कहा था कि संसार विनाश की राह पर आ चुका है और इसका हल तथाकथित धार्मिकों और राजनीतिज्ञों के पास नहीं है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

"गंगा बस उतनी नहीं है, जो ऊपर-ऊपर हमें नज़र आती है। गंगा तो पूरी की पूरी नदी है, शुरू से आखिर तक, जहां से उद्गम होता है, उस जगह से वहां तक, जहां यह सागर से एक हो जाती है। सिर्फ सतह पर जो पानी दीख रहा है, वही गंगा है, यह सोचना तो नासमझी होगी। ठीक इसी तरह से हमारे होने में भी कई चीजें शामिल हैं, और हमारी ईजादें सूझें हमारे अंदाजे विश्वास, पूजा-पाठ, मंत्र-ये सब के सब तो सतह पर ही हैं। इनकी हमें जाँच-परख करनी होगी, और तब इनसे मुक्त हो जाना होगा-इन सबसे, सिर्फ उन एक या दो विचारों, एक या दो विधि-विधानों से ही नहीं, जिन्हें हम पसंद नहीं करते।[9,10]

अब यह कुछ ऐसी वास्तविकता है जिसे मैं निश्चित होकर कह सकता हूँ कि मैंने उपलब्ध किया है। मेरे लिये, यह कोई सैद्धांतिक संकल्पना नहीं है। यह मेरे जीवन का अनुभव है, सुनिश्चित, वास्तविक और ठोस। इसलिए मैं इसकी उपलब्धि के लिए क्या आवश्यक है, यह कह सकता हूँ। और मैं कहता हूँ कि पहली चीज़ यह है कि हम जो है उसे वैसा का वैसा ही पहचाने यानि अपनी पूर्णता में कोई इच्छा क्या हो जायेगी, और तब प्रत्येक क्षण के अवलोकन में स्वयं को अनुशासित करें, जैसे कोई अपनी इच्छाओं को खुद ही देखे, और उन्हें उस अवैयक्तिक प्रेम की ओर निर्दिष्ट करे, जो कि उसकी स्वयं की निष्पत्ति हो। जब आप निरंतर जागरूकता का अनुशासन स्थापित कर लेते हैं। उन सब चीज़ों का जो आप सोचते हैं, महसूस करते हैं और करते हैं (अमल में लाते हैं) का निरंतर अवलोकन हम में से अधिकतर के जीवन में उपस्थित दमन, ऊब, भ्रम से मुक्त कर, अवसरों की श्रृंखला ले आता है जो हमें संपूर्णता की ओर प्रशस्त करती है। तो जीवन का लक्ष्य कुछ ऐसा नहीं जो कि बहुत दूर हो, जो कि दूर कहीं भविष्य में उपलब्ध करना है अपितु पल पल की, प्रत्येक क्षण की वास्तविकता, हर पल का यथार्थ जानने में है जो अभी अपनी अनन्तता सहित हमारे सामने साक्षात् ही है।[11,12] कृष्णमूर्ति कहते हैं, 'जब आप खुद को ही नहीं जानते, तो प्रेम व संबंध को कैसे जान पाएंगे?

'हम रूढ़ियों के दास हैं। भले ही हम खुद को आधुनिक समझ बैठें, मान लें कि बहुत स्वतंत्र हो गये हैं, परंतु गहरे में देखें तो हैं हम रूढ़िवादी ही। इसमें कोई संशय नहीं है क्योंकि छवि-रचना के खेल को आपने स्वीकार किया है और परस्पर संबंधों को इन्हीं के आधार पर स्थापित करते हैं। यह बात उतनी ही पुरातन है जितनी कि ये पहाड़ियां। यह हमारी एक रीति बन गई है। हम इसे अपनाते हैं, इसी में जीते हैं, और इसी से एक दूसरे को यातनाएं देते हैं। तो क्या इस रीति को रोका जा सकता है?

किसी मनुष्य की मौत से अलग, अंततः किसी पेड़ की मौत बहुत ही खूबसूरत होती है। किसी रेगिस्तान में एक मृत वृक्ष, उसकी धारियों वाली छाल, सूर्य की रोशनी और हवा से चमकी हुई उसकी देह, स्वर्ग की ओर उन्मुख नंगी टहनियाँ और तने। एक आश्चर्यजनक दृश्य होता है। एक सैकड़ों साल पुराना विशाल पेड़ बागड़ बनाने, फर्नीचर या घर बनाने या यूँ ही बगीचे की मिट्टी में खाद की तरह इस्तेमाल करने के लिए मिनटों में काट कर गिरा दिया जाता है। सौन्दर्य का ऐसा साम्राज्य मिनटों में नष्ट हो जाता है। मनुष्य चरागाह, खेती और निवास के लिए बस्तियाँ बनाने के लिए जंगलों में गहरे से गहरे प्रवेश कर उन्हें नष्ट कर चुका है। जंगल और उनमें बसने वाले जीव लुप्त होने लगे हैं। पर्वत श्रृंखलाओं से घिरी ऐसी घाटियाँ जो शायद धरती पर सबसे पुरानी रही हों, जिनमें कभी चीते, भालू और हिरन दिखा करते थे अब पूरी तरह खत्म हो चुके हैं, बस आदमी ही बचा है जो हर तरफ दिखाई देता है।[13,14] धरती की सुन्दरता तेज़ी से नष्ट और प्रदूषित की जा रही है। कारों और ऊँची बहुमंजिला इमारतें ऐसी जगहों पर दिख रही हैं जहाँ उनकी उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी। जब आप प्रकृति और चहुं ओर फैले वृहत आकाश से अपने सम्बन्ध खो देते हैं, आप आदमी से भी रिश्ते खत्म कर चुके होते हैं।

एक जीवनी लेखक मैरी लुटियंस का कहना है कि एक समय था जब उनका मानना था कि सही आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष मार्गदर्शन और शिक्षा के बाद उन्हें विश्व शिक्षक बनना था। एक अन्य जीवनी लेखक लीडबीटर और उनके सहयोगियों द्वारा उन पर लगाए गए दैनिक कार्यक्रम का वर्णन करता है, जिसमें कठोर व्यायाम और खेल, विभिन्न प्रकार के स्कूली विषयों में शिक्षण, थियोसोफिकल और धार्मिक पाठ, योग और ध्यान, साथ ही उचित स्वच्छता में निर्देश शामिल हैं। ब्रिटिश समाज और संस्कृति के

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

तरीकों में। उसी समय लीडबीटर ने कृष्णमूर्ति के समानांतर रहस्यमय निर्देश में मार्गदर्शक की भूमिका निभाई; उस समय इस निर्देश के अस्तित्व और प्रगति के बारे में कुछ चुनिंदा लोगों को ही पता था। [15,16]

जबकि उन्होंने खेलों में एक स्वाभाविक योग्यता दिखाई, कृष्णमूर्ति को हमेशा औपचारिक स्कूली शिक्षा में समस्या थी और अकादमिक रूप से झुकाव नहीं था। उन्होंने प्रवेश के कई प्रयासों के बाद अंततः विश्वविद्यालय की शिक्षा छोड़ दी। उन्होंने कुछ धाराप्रवाह के साथ कई बोलते हुए, विदेशी भाषाओं को भी लिया।

थियोसोफिस्टों द्वारा विकसित उनकी सार्वजनिक छवि, "एक अच्छी तरह से पॉलिश किए गए बाहरी, उद्देश्य की संयम, एक महानगरीय दृष्टिकोण और एक अलौकिक, लगभग उनके व्यवहार में लगभग सुंदर टुकड़ी की विशेषता थी।" स्पष्ट रूप से, "कहा जा सकता है कि इन सभी ने कृष्णमूर्ति की सार्वजनिक छवि को उनके जीवन के अंत तक चित्रित किया है।" यह स्पष्ट रूप से शुरू में ही स्पष्ट था कि उनके पास "एक सहज व्यक्तिगत चुंबकत्व था, जो एक गर्म भौतिक विविधता का नहीं था, लेकिन फिर भी इसकी तपस्या में भावनात्मक था, और पूजा को प्रेरित करने के लिए इच्छुक था।" हालाँकि, जैसे-जैसे वह बड़ा हो रहा था, कृष्णमूर्ति ने किशोर विद्रोह और भावनात्मक अस्थिरता के लक्षण दिखाए, जो उस पर लगाए गए शासन का पीछा करते हुए, अपने आस-पास के प्रचार के साथ स्पष्ट रूप से असहज थे, और कभी-कभी उनके लिए निर्धारित भविष्य के बारे में संदेह व्यक्त करते थे। कृष्णमूर्ति और नित्या को अप्रैल 1911 में इंग्लैंड ले जाया गया। इस यात्रा के दौरान कृष्णमूर्ति ने लंदन में ओएसई के सदस्यों को अपना पहला सार्वजनिक भाषण दिया। उनका पहला लेखन भी दिखाई देने लगा था, जो थियोसोफिकल सोसाइटी की पुस्तिकाओं में और थियोसोफिकल और ओएसई-संबद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ था। 1911 और 1914 में प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत के बीच, भाइयों ने कई अन्य यूरोपीय देशों का दौरा किया, हमेशा थियोसोफिस्ट संरक्षकों के साथ। इस बीच, कृष्णमूर्ति ने पहली बार एक धनी लाभार्थी, अमेरिकी मैरी मेलिसा होडले डॉज की बदौलत व्यक्तिगत वित्तीय स्वतंत्रता हासिल की थी, जो इंग्लैंड में अधिवासित था। [17,18]

युद्ध के बाद, कृष्णमूर्ति ने दुनिया भर में OSE के प्रमुख के रूप में अपने कर्तव्यों से संबंधित व्याख्यान, बैठकों और चर्चाओं की एक श्रृंखला शुरू की, नित्या के साथ, तब तक ऑर्डर के आयोजन सचिव। कृष्णमूर्ति ने भी लिखना जारी रखा। उनके भाषणों और लेखों की विषयवस्तु कमिंग की तैयारी में ऑर्डर और उसके सदस्यों के काम के इर्द-गिर्द घूमती थी। उन्हें शुरू में एक रुकने वाले, झिझकने वाले और दोहराव वाले वक्ता के रूप में वर्णित किया गया था, लेकिन उनकी डिलीवरी और आत्मविश्वास में सुधार हुआ, और उन्होंने धीरे-धीरे बैठकों की कमान संभाली।

1921 में कृष्णमूर्ति को 17 वर्षीय अमेरिकी हेलेन नॉथ से प्यार हो गया, जिसका परिवार थियोसोफिस्टों से जुड़ा था। अनुभव इस अहसास से प्रभावित था कि उनके काम और अपेक्षित जीवन-मिशन ने अन्यथा सामान्य संबंधों को नहीं माना और 1920 के दशक के मध्य तक दोनों अलग हो गए थे।

विचार-विमर्श

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार दुनिया को बेहतर बनाने के लिए ज़रूरी है यथार्थवादी और स्पष्ट मार्ग पर चलना। आपके भीतर कुछ भी नहीं होना चाहिए तब आप एक साफ और सुस्पष्ट आकाश होने के लिए तैयार हो। धरती का हिस्सा नहीं, आप स्वयं आकाश हैं। जे. कृष्णमूर्ति का कहना है कि यदि आप कुछ भी हैं तो फिर आप कुछ नहीं। कृष्णमूर्ति की शिक्षा जो उनके गहरे ध्यान, सही ज्ञान और श्रेष्ठ व्यवहार की उपज है ने दुनिया के तमाम दार्शनिकों, धार्मिकों और मनोवैज्ञानिकों को प्रभावित किया। उनका कहना था कि आपने जो कुछ भी परम्परा, देश और काल से जाना है उससे मुक्त होकर ही आप सच्चे अर्थों में मानव बन पाएँगे। जीवन का परिवर्तन सिर्फ इसी बोध में निहित है कि आप स्वतंत्र रूप से सोचते हैं कि नहीं और आप अपनी सोच पर ध्यान देते हैं

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

कि नहीं। उन्होंने 'आर्डर ऑफ दि स्टार' को भंग करते हुए कहा कि 'अब से कृपा करके याद रखें कि मेरा कोई शिष्य नहीं है, क्योंकि गुरु तो सच को दबाते हैं। सच तो स्वयं तुम्हारे भीतर है। सच को ढूँढने के लिए मनुष्य को सभी बंधनों से स्वतंत्र होना आवश्यक है।'[19,20]

जे. कृष्णमूर्ति अपने वार्ताओं तथा विचार विमर्शों के माध्यम से अपनी शिक्षाओं को बच्चों तक पहुंचाते हैं। क्योंकि मानव-मन के मूलभूत परिवर्तनों से तथा एक नवीन संस्कृति के सर्जन में जो केंद्रीभूत है, उसके सम्प्रेषण के लिए शिक्षा को कृष्णमूर्ति प्राथमिक महत्व का मानते हैं। ऐसा मौलिक परिवर्तन तभी संभव होता है, जब बच्चों की विभिन्न प्रकार की कार्यकुशलता तथा विषयों का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उसे स्वयं अपनी विचारणा तथा क्रियाशीलता के प्रति जागरूक होने की क्षमता भी प्रदान की जाती है। यह जागरूकता बच्चों के अंदर मनुष्य के साथ, प्रकृति के साथ तथा मानव-निर्मित यंत्रों के साथ सही संबंध को परिपक्व करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। कृष्णमूर्ति आंतरिक अनुशासन पर बल देते हैं। बाह्य अनुशासन मन को मूर्ख बना देता है, यह आप में अनुकूलता और नकल करने की प्रवृत्ति लाता है। परंतु यदि आप अवलोकन के द्वारा सुन करके, दूसरों की सुविधाओं का ध्यान करके, विचार के द्वारा अपने को अनुशासित करते हैं, तो इससे व्यवस्था आती है। जहां व्यवस्था होती है, वहां स्वतंत्रता सदैव रहती है। यदि आप ऐसा करने में स्वतंत्र नहीं है तो आप व्यवस्था नहीं कर सकते। व्यवस्था ही अनुशासन है। जे. कृष्णमूर्ति अपने शैक्षिक विचारों के माध्यम से शिक्षक और शिक्षार्थी को यह उत्तरदायित्व सौंपते हैं कि वे एक अच्छे समाज का निर्माण करें, जिसमें सभी मनुष्य प्रसन्नतापूर्वक जी सकें, शांति और सुरक्षा में हिंसा के बिना। क्योंकि आज के विद्यार्थी ही कल के भविष्य हैं।

जे. कृष्णमूर्ति के मौलिक दर्शन ने पारंपरिक, गैरपरंपरावादी विचारकों, दार्शनिकों, शीर्ष शासन-संस्थाप्रमुखों, भौतिक और मनोवैज्ञानियों और सभी धर्म, सत्य और यथार्थपरक जीवन में प्रवृत्त सुधिजनों को आकर्षित किया और उनकी स्पष्ट दृष्टि से सभी आलोकित हुए हैं। जे. कृष्णमूर्ति ने स्वयं तथा उनकी शिक्षाओं को महिमा मंडित होने से बचाने और उनकी शिक्षाओं की व्याख्या की जाकर विकृत होने से बचाने के लिए लिए अमरीका, भारत, इंग्लैंड, कनाडा और स्पेन में फाउण्डेशन स्थापित किये। भारत, इंग्लैंड और अमरीका में विद्यालय भी स्थापित किये जिनके बारे में उनका दृष्टिबोध था कि शिक्षा में केवल शास्त्रीय बौद्धिक कौशल ही नहीं वरन् मन-मस्तिष्क को समझने पर भी जोर दिया जाना चाहिये। जीवन यापन और तकनीकी कुशलता के अतिरिक्त जीने की कला कुशलता भी सिखाई जानी चाहिए। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि मनुष्य की वैयक्तिक और सामाजिक चेतना दो भिन्न चीजें नहीं, "पिण्ड में ही ब्रम्हांड है" इस को समझाया। उन्होंने बताया कि वास्तव में हमारी भीतर ही पूरी मानव जाति पूरा विश्व प्रतिबिम्बित है। प्रकृति और परिवेश से मनुष्य के गहरे रिश्ते और प्रकृति और परिवेश से अखण्डता की बात की। उनकी दृष्टि मानव निर्मित सारे बंटवारों, दीवारों, विश्वासों, दृष्टिकोणों से परे जाकर सनातन विचार के तल पर, क्षणमात्र में जीने का बोध देती है। अपने कार्य के बारे में उन्होंने कहा "यहां किसी विश्वास की कोई मांग या अपेक्षा नहीं है, यहां अनुयायी नहीं है, पंथ संप्रदाय नहीं है, व किसी भी दिशा में उन्मुख करने के लिए किसी तरह का फुसलाना प्रेरित करना नहीं है, और इसलिए हम एक ही तल पर, एक ही आधार पर और एक ही स्तर पर मिल पाते हैं, क्योंकि तभी हम सब एक साथ मिलकर मानव जीवन के अद्भुत घटनाक्रम का अवलोकन कर सकते हैं। उनके साहित्य में सार्वजनिक वार्ताएं, प्रश्नोत्तर, परिचर्चाएं, साक्षात्कार, परस्पर संवाद, डायरी और उनका खुद का लेखन शामिल है जो कि अब तक 75 से अधिक पुस्तकों और 700 से अधिक ऑडियो और 1200 से अधिक वीडियो कैसेट्स सीडी के रूप में उपलब्ध है। उनका मूल साहित्य अंग्रेजी भाषा में है, जिसका कई मुख्य प्रचलित भाषाओं में अनुवाद किया गया है। वार्ताएं, प्रश्नोत्तर, परिचर्चाएं, साक्षात्कार, परस्पर संवाद, प्रवचनों के ऑडियो और वीडियो टेप भी उपलब्ध हैं।[21,22]

1922 में कृष्णमूर्ति और नित्या ने सिडनी से कैलिफोर्निया की यात्रा की। कैलिफोर्निया में, वे ओजई घाटी में एक झोपड़ी में रहे। यह सोचा गया था कि इस क्षेत्र की जलवायु नित्या के लिए फायदेमंद होगी, जिसे तपेदिक का पता चला था। नित्या का खराब स्वास्थ्य कृष्णमूर्ति के लिए चिंता का विषय बन गया। [38] [39] ओजई में उनकी मुलाकात एक युवा अमेरिकी रोजालिंड विलियम्स से हुई, जो उन दोनों के करीब हो गए, और जो बाद में कृष्णमूर्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले थे।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

पहली बार भाइयों को उनके थियोसोफिकल सोसाइटी के विचारकों द्वारा तत्काल पर्यवेक्षण के बिना रखा गया था। उन्होंने घाटी को बहुत अनुकूल पाया। आखिरकार, समर्थकों द्वारा गठित एक ट्रस्ट ने उनके लिए एक झोपड़ी और आसपास की संपत्ति खरीदी। यह कृष्णमूर्ति का आधिकारिक निवास बन गया।

अगस्त और सितंबर 1922 में ओजई में, कृष्णमूर्ति एक गहन 'जीवन-परिवर्तन' अनुभव से गुजरे। इसे आध्यात्मिक जागृति, एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन और एक शारीरिक सुधार के रूप में विभिन्न रूप से चित्रित किया गया है। प्रारंभिक घटनाएं दो अलग-अलग चरणों में हुईं: पहला तीन दिवसीय आध्यात्मिक अनुभव, और दो सप्ताह बाद, एक लंबे समय तक चलने वाली स्थिति जिसे कृष्णमूर्ति और उनके आसपास के लोगों ने प्रक्रिया के रूप में संदर्भित किया। यह स्थिति बार-बार अंतराल पर और अलग-अलग तीव्रता के साथ, उसकी मृत्यु तक दोहराई गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इसकी शुरुआत 17 अगस्त 1922 को हुई जब कृष्णमूर्ति ने अपनी गर्दन के पिछले हिस्से में तेज दर्द की शिकायत की। अगले दो दिनों में दर्द और संवेदनशीलता में वृद्धि, भूख न लगना, और कभी-कभी बेहोशी की गड़गड़ाहट के साथ लक्षण बिगड़ गए। ऐसा लग रहा था कि वह बेहोश हो गया था, लेकिन बाद में उसने बताया कि वह अपने परिवेश के बारे में बहुत जागरूक था, और उस अवस्था में उसे "रहस्यमय मिलन" का अनुभव था। अगले दिन लक्षण और अनुभव तेज हो गए, "अत्यधिक शांति" की भावना के साथ चरमोत्कर्ष। निम्नलिखित - और जाहिरा तौर पर संबंधित - इन घटनाओं से वह स्थिति जिसे प्रक्रिया के रूप में जाना जाने लगा उस वर्ष सितंबर और अक्टूबर में, एक नियमित, लगभग रात की घटना के रूप में, उसे प्रभावित करना शुरू कर दिया। बाद में प्रक्रिया रुक-रुक कर शुरू हुई, दर्द, शारीरिक परेशानी और संवेदनशीलता की अलग-अलग डिग्री के साथ, कभी-कभी एक बच्चे जैसी स्थिति में चूक, और कभी-कभी चेतना से स्पष्ट रूप से लुप्त होती, या तो उसका शरीर दर्द में दे रहा था या उसका दिमाग "बंद हो रहा था" [23,24]

इन अनुभवों के साथ या उसके बाद एक दूसरे के रूप में वर्णित किया गया था, "आशीर्वाद," "विशालता," "पवित्रता," "विशालता" और, अक्सर, "अन्यता" या "दूसरा"। यह प्रक्रिया से अलग एक राज्य था। [49] लुटियंस के अनुसार उनकी नोटबुक से यह स्पष्ट है कि अन्यता का यह अनुभव उनके जीवन के दौरान "लगभग लगातार उनके साथ" था, और उन्हें "संरक्षित होने की भावना" दी। कृष्णमूर्ति ने अपनी नोटबुक में इसका वर्णन आमतौर पर प्रक्रिया के तीव्र अनुभव के बाद किया है, उदाहरण के लिए, अगले दिन जागने पर:

... अन्यता की उस मजबूत भावना के साथ जल्दी जाग गया, एक और दुनिया की जो सभी विचारों से परे है ... संवेदनशीलता की ऊंचाई है। संवेदनशीलता, न केवल सुंदरता के लिए बल्कि अन्य सभी चीजों के प्रति भी। घास का ब्लेड आश्चर्यजनक रूप से हरा था; कि घास के एक ब्लेड में रंग का पूरा स्पेक्ट्रम होता है; यह तीव्र, चकाचौंध और इतनी छोटी सी चीज थी, जिसे नष्ट करना इतना आसान था

परायेपन का यह अनुभव उनके साथ दैनिक आयोजनों में उपस्थित था:

यह अजीब है कि कैसे एक या दो साक्षात्कारों के दौरान उस शक्ति, उस शक्ति ने कमरे को भर दिया। यह किसी की आंखों और सांसों में लग रहा था। यह अचानक और सबसे अप्रत्याशित रूप से, एक बल और तीव्रता के साथ अस्तित्व में आता है जो काफी शक्तिशाली होता है और कभी-कभी यह चुपचाप और शांति से होता है। लेकिन यह वहां है, चाहे कोई इसे चाहे या नहीं। इसके अभ्यस्त होने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि यह न कभी था और न ही कभी होगा..." [25,26]

1922 की प्रारंभिक घटनाओं के बाद से, कृष्णमूर्ति के इस अनुभव के लिए कई स्पष्टीकरण प्रस्तावित किए गए हैं। [ई] लीडबीटर और अन्य थियोसोफिस्टों को उम्मीद थी कि "वाहन" में कुछ असाधारण अनुभव होंगे, लेकिन फिर भी इन घटनाओं से रहस्यमय

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

हो गए। कृष्णमूर्ति के बाद के वर्षों के दौरान, निरंतर प्रक्रिया की प्रकृति और उद्गम अक्सर उनके और सहयोगियों के बीच निजी चर्चा में एक विषय के रूप में सामने आए; इन चर्चाओं ने इस विषय पर कुछ प्रकाश डाला लेकिन अंततः अनिर्णायक रहे। [52] जो भी हो, प्रक्रिया, और लीडबीटर की इसे संतोषजनक ढंग से समझाने में असमर्थता, यदि बिल्कुल भी, जीवनी लेखक रोलैंड वर्नोन के अनुसार अन्य परिणाम थे:

ओजई की प्रक्रिया, चाहे उसका कारण या वैधता जो भी हो, कृष्ण के लिए एक विनाशकारी मील का पत्थर था। इस समय तक, उनकी आध्यात्मिक प्रगति, भले ही यह हो सकती थी, थियोसोफी के महानुभावों द्वारा गंभीर विचार-विमर्श के साथ योजना बनाई गई थी। ... अब कुछ नया हुआ था जिसके लिए कृष्ण के प्रशिक्षण ने उन्हें पूरी तरह से तैयार नहीं किया था। ... उनकी अंतरात्मा से एक बोझ हट गया और उन्होंने एक व्यक्ति बनने की दिशा में पहला कदम बढ़ाया। ... शिक्षक के रूप में उनकी भविष्य की भूमिका के संदर्भ में, प्रक्रिया उनका आधार थी। ... यह उनके पास अकेला आया था और उनके गुरुओं द्वारा उनमें नहीं लगाया गया था ... इसने कृष्ण को वह मिट्टी प्रदान की जिसमें उनके आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की नई भावना निहित हो सके। [27]

जैसे ही इन रहस्यमय अनुभवों की खबर फैली, कृष्णमूर्ति की मसीही स्थिति के बारे में अफवाहें बुखार की पिच पर पहुंच गईं, क्योंकि इसकी स्थापना की 50 वीं वर्षगांठ पर 1925 थियोसोफिकल सोसाइटी कन्वेंशन की योजना बनाई गई थी। महत्वपूर्ण घटनाओं की उम्मीद थी। कृष्णमूर्ति की बढ़ती हुई आराधना के साथ-साथ इससे बढ़ती हुई बेचैनी भी थी। संबंधित विकास में, प्रमुख थियोसोफिस्ट और उनके गुट समाज के भीतर आने वाले के सापेक्ष खुद को अनुकूल रूप से स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे, जो व्यापक रूप से निकट आने की अफवाह थी। उन्होंने कहा कि "अत्यधिक सब कुछ बुरा है।" आध्यात्मिक उन्नति की असाधारण" घोषणाएं विभिन्न दलों द्वारा की गईं, दूसरों द्वारा विवादित, और आंतरिक थियोसोफिकल राजनीति ने कृष्णमूर्ति को और अलग कर दिया।

इस दौरान नित्या की लगातार स्वास्थ्य समस्याएं समय-समय पर सामने आती रहीं। 13 नवंबर 1925 को, 27 वर्ष की आयु में, ओजई में इन्फ्लूएंजा और तपेदिक की जटिलताओं से उनकी मृत्यु हो गई, नित्या के खराब स्वास्थ्य के बावजूद, उनकी मृत्यु अप्रत्याशित थी, और इसने थियोसोफी और थियोसोफिकल सोसाइटी के नेताओं में कृष्णमूर्ति के विश्वास को मूल रूप से हिला दिया। एनी बेसेंट और कृष्णमूर्ति के सर्कल द्वारा साझा की गई एक मान्यता, उन्हें नित्या के स्वास्थ्य के बारे में उनका आश्वासन मिला था, और उन्हें विश्वास हो गया था कि "नित्य [उनके] जीवन-मिशन के लिए आवश्यक थे और इसलिए उन्हें मरने की अनुमति नहीं दी जाएगी।" जयकर ने लिखा है कि "परास्नातक और पदानुक्रम में उनका विश्वास एक पूर्ण क्रांति से गुजरा था।" इसके अलावा, नित्या "अपने परिवार और बचपन के लिए अंतिम जीवित कड़ी थी। ... एकमात्र व्यक्ति जिससे वह खुलकर बात कर सकता था, उसका सबसे अच्छा दोस्त और साथी।" चश्मदीद गवाहों के अनुसार, इस खबर ने "उन्हें पूरी तरह तोड़ दिया।" लेकिन नित्या की मृत्यु के 12 दिन बाद वह "बेहद शांत, उज्ज्वल और सभी भावनाओं और भावनाओं से मुक्त" थे; "कोई छाया नहीं थी ... यह दिखाने के लिए कि वह क्या कर रहा था।" [28]

अतीत के साथ तोड़ो

अगले कुछ वर्षों में, कृष्णमूर्ति की नई दृष्टि और चेतना का विकास जारी रहा। उनकी बातचीत, चर्चा और पत्राचार में नई अवधारणाएं सामने आईं, साथ में एक विकसित शब्दावली भी थी जो उत्तरोत्तर थियोसोफिकल शब्दावली से मुक्त थी। [62] उनकी नई दिशा 1929 में चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई, जब उन्होंने लीडबीटर और बेसेंट द्वारा ऑर्डर ऑफ द स्टार को जारी रखने के प्रयासों को खारिज कर दिया।

कृष्णमूर्ति ने 3 अगस्त 1929 को नीदरलैंड के ओमन में वार्षिक स्टार कैंप के दौरान आदेश को भंग कर दिया। उन्होंने कहा कि उन्होंने पिछले दो वर्षों के दौरान "सावधानीपूर्वक विचार" के बाद अपना निर्णय लिया था, और वह:

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

मेरा मानना है कि सत्य एक पथविहीन भूमि है, और आप किसी भी रास्ते, किसी भी धर्म, किसी भी संप्रदाय द्वारा उस तक नहीं पहुंच सकते। यह मेरा दृष्टिकोण है, और मैं इसका पूरी तरह और बिना शर्त पालन करता हूं। सत्य, असीम, बिना शर्त, किसी भी मार्ग से अगम्य होने के कारण, संगठित नहीं किया जा सकता है; न ही किसी खास रास्ते पर लोगों का नेतृत्व करने या उन्हें मजबूर करने के लिए किसी संगठन का गठन किया जाना चाहिए। ... यह कोई शानदार काम नहीं है, क्योंकि मुझे अनुयायी नहीं चाहिए, और मेरा मतलब यही है। जिस क्षण आप किसी का अनुसरण करते हैं, आप सत्य का अनुसरण करना बंद कर देते हैं। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप मेरी बातों पर ध्यान दें या नहीं। मैं दुनिया में एक निश्चित काम करना चाहता हूं और मैं इसे अटूट एकाग्रता के साथ करने जा रहा हूं। मैं केवल एक आवश्यक चीज के साथ अपने संबंध में हूं: मनुष्य को मुक्त करना। मैं उसे सभी पिंजरों से, सभी भयों से मुक्त करना चाहता हूं, न कि धर्मों, नए संप्रदायों को खोजने के लिए [29]

परिणाम

कृष्णमूर्ति ने धर्म, अध्याय, दर्शन, मनोविज्ञान व शिक्षा को अपनी अंतर्दृष्टि के माध्यम से नये आयाम दिए। छह दशकों से भी अधिक समय तक विश्व के विभिन्न भागों में, अलग-अलग पृष्ठभूमियों से आए श्रोताओं के विशाल समूह कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व तथा वचनों की ओर आकर्षित होते रहे, पर वे किसी के गुरु नहीं थे। अपने ही शब्दों में वे तो बस एक दर्पण थे जिसमें इंसान खुद को देख सकता है। वे किसी समूह के नहीं, सच्चे अर्थों में समस्त मानवता के मित्र थे। उनकी वार्ताएं व संवाद, दैनंदिनियों व पत्र पाठ से अधिक पुस्तकों में संग्रहीत हैं। शिक्षाओं के इस विशाल भंडार से विविध विषयों पर आधारित प्रस्तुत पुस्तकमाला का संकलन किया गया है। प्रत्येक पुस्तक एक ऐसे विषय को केंद्रबिंदु बनाती है, जिसकी हमारे जीवन में विशिष्ट प्रासंगिकता तथा महत्त्व है।

फाउंडेशन कृष्णमूर्ति के कार्यों को संरक्षित करने और उपलब्ध कराने के लिए मौजूद है। हम यूके में स्थित एक चैरिटी हैं, जो कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं को अपने जीवन में समझने वालों को विश्वव्यापी सेवा प्रदान करते हैं। हम अपने संग्रह, मुफ्त वीडियो और ऑडियो, सोशल मीडिया और पॉडकास्ट परियोजनाओं के लिए धन्यवाद, कृष्णमूर्ति को अब और भविष्य में व्यापक रूप से जाना जाता है, यह सुनिश्चित करने के साथ-साथ हम सक्रिय रूप से प्रामाणिक किताबें, क्यूरेटेड लेख और उद्धरण प्रकाशित करते हैं। [30]

जे. कृष्णमूर्ति को व्यापक रूप से सभी समय के महानतम दार्शनिकों और शिक्षकों में से एक माना जाता है। सात दशकों तक, उन्होंने दुनिया भर में बड़े दर्शकों और लेखकों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और शिक्षकों सहित कई व्यक्तियों के साथ बात की।

कृष्णमूर्ति पूरी मानवता से संबंधित थे, उनकी कोई राष्ट्रीयता या विश्वास नहीं था, और वे किसी समूह या संस्कृति से संबंधित नहीं थे। उन्होंने भारत, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में स्कूलों की स्थापना की जो मानवता की संपूर्ण समझ और जीवन जीने की कला के लिए शिक्षित करना जारी रखते हैं। कृष्णमूर्ति ने जोर देकर कहा कि केवल इस गहन समझ के साथ ही हम शांति से रह सकते हैं: 'मानवता में आशा है, समाज में नहीं, व्यवस्थाओं में नहीं, संगठित धार्मिक व्यवस्थाओं में नहीं, बल्कि आप में और मुझमें है।' उनकी शिक्षाओं के केंद्रीय विषयों में स्वतंत्रता, प्रेम, भय, ध्यान और बुद्धि शामिल हैं। हैम्पशायर यूके में ब्रॉकवुड पार्क, यूरोप में कृष्णमूर्ति का घर था। ब्रॉकवुड में ब्रॉकवुड पार्क स्कूल, द कृष्णमूर्ति सेंटर और फाउंडेशन शामिल हैं। कृष्णमूर्ति द्वारा स्थापित ब्रॉकवुड पार्क स्कूल, एक अंतरराष्ट्रीय बोर्डिंग स्कूल है जो 14-19 आयु वर्ग के लगभग 70 छात्रों के लिए एक व्यक्तिगत समग्र शिक्षा प्रदान करता है। यह अकादमिक उत्कृष्टता, आत्म-समझ, रचनात्मकता और अखंडता को प्रोत्साहित करता है। कृष्णमूर्ति सेंटर साउथ डाउन्स नेशनल पार्क के खूबसूरत ग्रामीण इलाकों में स्थित एक अनूठा रिट्रीट और स्टडी सेंटर है। यह कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के आलोक में, स्वयं के बारे में पूछताछ करने के इच्छुक लोगों के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक विश्राम प्रदान करता है। [31]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

कृष्णमूर्ति वर्ल्ड स्कूल के पीछे की अवधारणा अपने आप में भगवान कृष्ण की विश्व स्तर पर स्वीकार्य विचारधारा को आत्मसात करती है जिसमें बारहमासी और अनंत अनुप्रयोग हैं। भगवान की विचारधारा के अनुरूप, स्कूल "निष्कर्म कर्म" में विश्वास करता है, परिणाम की उम्मीद के बिना निरंतर प्रदर्शन। स्कूल का मानना है कि अगर कर्तव्य का पूरी तरह से पालन किया जाए तो परिणाम काफी स्पष्ट है। भगवान कृष्ण के प्रेरक वचन भगवत गीता के संदेश की सराहना करते हुए, स्कूल का उद्देश्य अपने छात्रों को इस तरह से तैयार करना है कि वे आत्मनिर्भरता के माध्यम से समय की चुनौतियों का सामना कर सकें और अपने लिए खड़े हो सकें।

कृष्णमूर्ति ने भारत में पांच स्कूलों की स्थापना की, एक इंग्लैंड में, ब्रॉकवुड पार्क स्कूल और एक कैलिफोर्निया, ओक ग्राव स्कूल में। पीछे जाने पर, उन्होंने निम्नलिखित को अपने शैक्षिक उद्देश्यों के रूप में बताया:

वैश्विक दृष्टिकोण : संपूर्ण की दृष्टि भाग से भिन्न है; कभी भी एक सांप्रदायिक दृष्टिकोण नहीं होना चाहिए, लेकिन हमेशा सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त एक समग्र दृष्टिकोण होना चाहिए।

मनुष्य और पर्यावरण के लिए चिंता : मानवता प्रकृति का हिस्सा है, और अगर प्रकृति की देखभाल नहीं की जाती है, तो यह मनुष्य पर भारी पड़ेगा। केवल सही शिक्षा, और हर जगह लोगों के बीच गहरा स्नेह, पर्यावरणीय चुनौतियों सहित कई समस्याओं का समाधान करेगा।

धार्मिक भावना, जिसमें वैज्ञानिक स्वभाव भी शामिल है : धार्मिक मन अकेला होता है, अकेला नहीं। यह लोगों और प्रकृति के साथ संवाद में है।

निष्कर्ष

जिदू कृष्णमूर्ति की इस नई विचारधारा की ओर समाज का बौद्धिक वर्ग आकृष्ट हुआ और लोग पथ-प्रदर्शन के लिए उनके पास आने लगे थे। उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की, जिनमें दक्षिण भारत का 'ऋषिवैली' स्कूल विशेष उल्लेखनीय है। भारत के इस महान् व्यक्तित्व की 91 वर्ष की आयु में 17 फरवरी, 1986 ई. में मृत्यु हो गई। कृष्णमूर्ति ने बड़ी ही फुर्ती और जीवटता से लगातार दुनिया के अनेकों भागों में भ्रमण किया और लोगों को शिक्षा दी और लोगों से शिक्षा ली। उन्होंने पूरा जीवन एक शिक्षक और छात्र की तरह बिताया। मनुष्य के सर्व प्रथम मनुष्य होने से ही मुक्ति की शुरुआत होती है। किंतु आज का मानव हिंदू, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान, अमेरिकी, अरबी या चाइनी है। उन्होंने कहा था कि संसार विनाश की राह पर आ चुका है और इसका हल तथाकथित धार्मिकों और राजनीतिज्ञों के पास नहीं है [32]

कृष्णमूर्ति का 17 फरवरी 1986 को 90 वर्ष की आयु में अग्राशय के कैसर से निधन हो गया। उनके अवशेषों का अंतिम संस्कार किया गया। केएफटी (कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट) की घोषणा मृत्यु के क्षण तक उनकी स्वास्थ्य स्थिति के बारे में बताती है। पहला लक्षण उनकी मृत्यु से लगभग नौ महीने पहले आया, जब उन्हें बहुत थकान महसूस हुई। अक्टूबर 1985 में, वे इंग्लैंड (ब्रॉकवुड पार्क स्कूल) से भारत चले गए और उसके बाद, उन्हें थकावट, बुखार और वजन कम होने लगा। कृष्णमूर्ति ने मद्रास में अपनी अंतिम वार्ता के बाद ओजई (10 जनवरी 1986) वापस जाने का फैसला किया, जिसके लिए 24 घंटे की उड़ान की आवश्यकता थी। एक बार जब वे ओजई पहुंचे तो उनका चिकित्सकीय [31] परीक्षण किया गया जिसमें पता चला कि वे अग्राशय के कैसर से पीड़ित थे। कैसर लाइलाज था, या तो शल्य चिकित्सा या अन्यथा, इसलिए कृष्णमूर्ति ने ओजई में अपने घर वापस जाने का फैसला किया, जहां उन्होंने अपने अंतिम दिन बिताए। दोस्तों और पेशेवरों ने उसका पालन-पोषण किया। उनका मन अंतिम क्षण तक निर्मल था। कृष्णमूर्ति का निधन 17 फरवरी 1986 को कैलिफोर्निया समयानुसार मध्यरात्रि के 10 मिनट बाद हुआ। उनकी इच्छा के अनुसार, कोई स्मारक सेवा आयोजित नहीं की गई थी। [32]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

संदर्भ

1. जे. कृष्णमूर्ति (हिंदी) जनमानस परिष्कार मंच। अभिगमन तिथि: 17 फ़रवरी, 2013।
2. † जे. कृष्णमूर्ति- शिक्षा क्या है ? (हिंदी) भारतीय साहित्य संग्रह। अभिगमन तिथि: 17 फ़रवरी, 2013।
3. † जे. कृष्णमूर्ति- एक देदीप्यमान नक्षत्र (हिंदी) सृजनगाथा। अभिगमन तिथि: 16 फ़रवरी, 2013।
4. † जे. कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन (हिंदी) देशबंधु। अभिगमन तिथि: 17 फ़रवरी, 2013।
5. † जे. कृष्णमूर्ति जी का परिचय (हिंदी) जे कृष्णमूर्ति इन हिन्दी। अभिगमन तिथि: 17 फ़रवरी, 2013।
6. लुटियंस, "फुलफिलमेंट," फरार, स्ट्रॉस हार्डकवर, पृष्ठ 59-60। प्रारंभ में, कृष्णमूर्ति (राजगोपाल और अन्य के साथ) KWINC के ट्रस्टी थे। अंततः उन्होंने एक ट्रस्टी बनना बंद कर दिया, राजगोपाल को राष्ट्रपति के रूप में छोड़ दिया - घटनाओं का एक मोड़ जो कि लुटियंस के अनुसार, "... एक ऐसी स्थिति थी जिसके सबसे दुखी परिणाम थे।"
7. † पुपुल मेहता (बाद में जयकर) के चश्मदीद गवाह के लिए जयकर, "कृष्णमूर्ति," अध्याय 11 देखें।
8. † इलियट गोल्डबर्ग, द पाथ ऑफ़ मॉडर्न योगा (रोचेस्टर वीटी: इनर ट्रेडिशन 2016), पी। 380.
9. † जयकर, "कृष्णमूर्ति," पृष्ठ 142.
10. † चयनित प्रकाशन/पुस्तकों की सूची उपखंड देखें
11. † कृष्णमूर्ति और अकादमिक दुनिया पर चर्चा के लिए रेमंड मार्टिन द्वारा, वाइसवर्थ, 2003 परदेखें कृष्णमूर्ति ।
12. † जयकर, "कृष्णमूर्ति" पृष्ठ 340-343 देखें।
13. † लुटियंस, "द ओपन डोर," पृष्ठ 84-85. इसके अलावा लुटियंस, "द लाइफ एंड डेथ ऑफ़ कृष्णमूर्ति," पी। 185.
14. † लुटियंस, "फुलफिलमेंट," फरार, स्ट्रॉस हार्डकवर, पृष्ठ 171, फाउंडेशन बुलेटिन में प्रकाशित कृष्णमूर्ति का बयान, 1970।
15. † लुटियंस, "फुलफिलमेंट," फरार, स्ट्रॉस हार्डकवर, पृष्ठ 233.
16. † लुटियंस देखें, "द लाइफ एंड डेथ ऑफ़ कृष्णमूर्ति," लंदन: जॉन मरे, पृष्ठ 206। कृष्णमूर्ति को 7 फरवरी 1986 को बनाई गई टेप-रिकॉर्डिंग से उद्धृत करते हुए।
17. † लुटियंस, "फुलफिलमेंट" फरार, स्ट्रॉस हार्डकवर, पृष्ठ 119.
18. † सैक्सन, वोल्फगैंग (18 फरवरी 1986)। "जिदू कृष्णमूर्ति, 90, मर चुके हैं; भारत से धार्मिक दार्शनिक" । द न्यूयॉर्क टाइम्स । आईएसएसएन 0362-4331 । 21 जनवरी 2022 को लिया गया ।
19. † "जिदू कृष्णमूर्ति" । ध्यान डायरी डॉट कॉम । 17 फरवरी 2016। 21 फरवरी 2016 को मूल से संग्रहीत । 18 फरवरी 2016 को लिया गया ।
20. † जयकर, पुपुल (14 अक्टूबर 2000)। जे कृष्णमूर्ति: एक जीवनी । पेंगुइन यूके। आईएसबीएन 978-93-5118-284-9.
21. † देखें एज़ द रिवर जॉइन्स द ओशन: रिप्लेक्संस अबाउट जे. कृष्णमूर्ति, जिदू नारायण द्वारा, एडविन हाउस पब्लिशिंग 1999, पृष्ठ 64.
22. † इवेजेलोस ग्रैमेनोस (12 दिसंबर 2003)। कृष्णमूर्ति और चौथा रास्ता । पी। 200. आईएसबीएन 9788178990057.
23. † "एलन वाट्स जिदू कृष्णमूर्ति के बारे में बात कर रहे हैं। वह एक असाधारण रहस्यवादी थे" । यूट्यूब ।
24. † <https://j.krishnamurti.org/sites/default/files/Robert-Colet-Bruce-Lee.pdf> † नंगे यूआरएल पीडीएफ ।
25. † "कृष्णमूर्ति केंद्र में बोलते हुए टेरेस स्टैम्प" । यूट्यूब ।
26. † www.columbia.edu <https://web.archive.org/web/20200928210718/http://www.columbia.edu/%7Elnp3/mypdocs/culture/pollock.htm> । मूल से 28 सितंबर 2020 को संग्रहीत किया गया।
27. † "स्मरण ध्यान शिक्षक टोनी पैकर (1927 - 2013) - शेर की दहाड़" ।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

28. ^ "मृत्युलेख: अच्युत पटवर्धन" । द इंडिपेंडेंट । 23 अक्टूबर 2011। 8 जून 2022 को मूल से संग्रहीत । 28 नवंबर 2017 को लिया गया ।
29. ^ "दादा धर्माधिकारी जीवनी" । mkgandhi-sarvodaya.org । मूल से 9 नवंबर 2011 को संग्रहीत । 28 नवंबर 2017 को लिया गया ।
30. ^ "कृष्णमूर्ति की आँखों से" । यूट्यूब ।
31. ^ द कम्प्लीट टीचिंग प्रोजेक्ट आर्काइव्ड 2 फरवरी 2009 को वेबैक मशीन पर भी देखें, कृष्णमूर्ति के काम के पूरे शरीर को एक सुसंगत रूप से संपादित मास्टर संदर्भ में एकत्रित करने का एक महत्वाकांक्षी प्रयास।
32. ^ "ट्यूब और बर्जर की 'खुशी की छाप' - नमूना स्रोत की खोज करें" । किसका नमूना लिया । 13 अक्टूबर 2022 को लिया गया ।